8 August

①

② Social Group, meaning, Classification and Reference groups

Social Groups

→ सामाजिक समूह उन सामाजिक प्राणियों का एक संग्रह है जिनके बीच किसी-न-किसी प्रकार का संबंध पाया जाता है। वास्तव में समूह व्यक्तियों का एक झुण्ड होता है जिसका सबसे छोटा आकार के रूप में जिसमें दो व्यक्ति होते हैं जैसे पति-पत्नी, माँ-बेटी शिक्षक - विद्यार्थी etc.। इस मानव झुण्ड या संग्रह का विस्तृत रूप भी हो सकता है जैसे:- क्लब, स्कूल विश्वविद्यालय, जाति, राष्ट्र etc.।

आगबर्न और निमकॉफ के अनुसार :-

"जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।"

मेकाइवर और पेज :- "समूह का हमें यह अर्थ लगाना चाहिए कि वह व्यक्तियों का कोई संग्रह है जिसमें व्यक्ति एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंध में लाये जाते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी सामाजिक समूह में दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी सामान्य जानकारी मान्यता या उद्देश्य के आधार पर एक-दूसरे के साथ संबंधित रहते हैं तथा एक-दूसरे को

प्रभावित करते हैं तो उसे हम "सामाजिक समूह कहते हैं।

Classification of Groups

सर्वप्रथम अमेरिकी समाजशास्त्री चार्ल्स कूले ने सन् 1909 में अपनी पुस्तक "सोशल आर्गनाइजेशन" प्रकाशित हुई थी जिसमें सामाजिक संबंधों के आधार पर प्राथमिक समूह की चर्चा की बाद में समाजशास्त्रियों ने ऐसे समूहों से अनेक विशेषताएँ प्रस्तुत करने वाले समूहों को द्वितीयक समूह की संज्ञा दी है।

प्राथमिक समूह :- चार्ल्स कूले ने कहा :- प्राथमिक समूह में सहयोग तथा इनमें अपनत्व की भावना पाई जाती है। एक-दूसरे की सहायता और सहयोग के लिए प्रत्येक क्षण प्रस्तुत रहते हैं।"

किंग्सले डेविस ने कहा :- अपनी पुस्तक "ह्यूमन सोसाइटी" में कहा कि "हम की भावना" के आधार पर तथा आमने-सामने के आधार पर समूह को अलग नहीं कर सकते क्योंकि हम की भावना बड़े-बड़े सैद्धांतिक समूहों में भी होती है और

Exam:- सेना का एक सिपाही यदि किसी लड़की से निरंतर प्रेम संबंधों से प्रेरित होकर पक्षपातपूर्ण व्यवहार करता है तो उनमें आमने-सामने का संबंध नहीं होने पर भी निश्चित रूप से उनमें प्राथमिक संबंध पाया जाता है इसके विपरीत एक सिपाही अपने ऑफिसर को आमने-सामने होकर सलाम करता है वह प्राथमिक संबंध न होकर औपचारिक संबंध ही होता है।

Scanned with CamScanner

+ Add.
+ R.N. Mukherjee

PAGE
DATE

प्राथमिक समूहों का महत्वपूर्ण विशेषताएँ :-

① **आमने-सामने का संबंध :-** प्राथमिक समूह एक घनिष्ठ समूह है और घनिष्ठता तभी पनपती है जब एक समूह के सदस्यों का पारस्परिक संबंध आमने-सामने का होता है क्योंकि परस्पर एक-दूसरे को देखने को देखने और आपस में बातचीत करने से विचारों और भावनाओं का आदान-प्रदान करना तथा एक-दूसरे को अधिक रूप से समझना सरल हो जाता है। प्राथमिक समूहों की स्थिरता के लिए यह आवश्यक भी है।

② **संबंधों के विशेषीकरण का अभाव :-** प्राथमिक समूहों की दूसरी विशेषता यह है कि कि इन समूहों का निर्माण किसी विशेष उद्देश्य को लेकर नहीं होता है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि प्राथमिक समूहों के सदस्य एक सामान्य आधार पर मिलते हैं और किसी विशेष हित या स्वार्थ की पूर्ति पर बल नहीं देते।

③ **अधिक-स्थायित्व :-** प्राथमिक समूह अन्य समूहों की अपेक्षा अधिक स्थायी होता है। इसका प्रमुख कारण यह है कि इन समूहों का कोई एक विशेष उद्देश्य न होकर सामान्य उद्देश्य होते हैं जो अधिक स्थायी भी होता है। इसलिए ऐसे समूहों में घनिष्ठ संबंध पाया जाता है।

④ **सदस्यों की कम संख्या :-** इस समूह का आकार छोटा होता है। कुछ सीमित संख्या के लोग ही इसके सदस्य होते हैं। चार्ल्स कूले ने कहा कि प्राथमिक समूह वह छोटा समूह है जिसकी सदस्य संख्या दो से लेकर अधिक-से-अधिक पचास-साठ तक होती है। ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि इसके बिना आमने-सामने का संबंध और घनिष्ठता पनप ही नहीं सकता।

Scanned with CamScan